इस्लाम में माँ का दर्जा



मौलाना मोहम्मद सुहुफ़ी साहिब
अनुवादक – हुसैन हैदर रिज़वी

माँ से नेक स्लूक गुनाहों का कफ़्फ़ारा है

इस्लाम माँ के साथ एहसान को गुनाहों की माफी का ज़रिया बताता है और उसके हक़ में नेकी को अल्लाह तआला की खुशी और गुनाहों की माफी का की वजह गिनता है।

एक शख़्स को रसूल (स0) की ख़िदमत में हाज़िर होने का मौक़ा मिला और उसने अर्ज़ किया : ''ऐ रसूल (स0)! मैंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत गुनाह किये हैं और जिस बुराई का मौक़ा मिला उसको को कर गया हूँ। क्या तौबा का दरवाज़ा मेरे लिए खुला है और अल्लाह तआला मेरी तौबा क़बूल फरमा लेगा?''

रसूल (स0) ने फरमाया : ''क्या तुम्हारे माँ–बाप में से कोई ज़िन्दा हैं?''

उसने अर्ज़ किया : ''जी हाँ मेरा बाप ज़िन्दा है।''

हुज़ूर (स0) ने फरमाया : ''जा और उसके साथ नेकी कर।'' (ताकि तेरे गुनाह माफ हो जायें)

जब वह शख़्स खुदा हाफिज़ कहकर दरवाज़े से बाहर निकल गया तो आपने फरमाया : ''काश इसकी माँ ज़िन्दा होती।''

हज़रत (स0) के इरशाद से मुराद यह थी कि अगर उसकी माँ ज़िन्दा होती और वह उससे नेक सुलूक करता तो उसके गुनाह जल्द माफ हो जाते। (बहारुल अनवार जिल्द–74 पेज–82)

एक और हदीस में इस तरह आया है :

एक शख़्स रसूल (स0) की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया : ''ऐ रसूल (स0)! अल्लाह तआला ने मुझे एक बेटी अता की है। मैंने उसे पाला–पोसा यहाँ तक कि वह बड़ी होकर समझदारी की उम्र को पहुँच गई। एक दिन मैंने उसे खूब सजाया संवारा और अच्छे कपड़े पहनाए फिर उसे साथ ले जाकर एक कुएँ में धक्का दे दिया। आख़री कल्मा जो मैंने कुएँ में से उस बेगुनाह बेटी की ज़बान से सुना वह यह था : ''हाए अब्बा जान''! अब मैं अपने किए पर शर्मिन्दा हूँ। आप फरमाएँ कि मेरे गुनाह का कफ्फारा क्या है और मैं क्या करूँ ताकि उस गुनाह का बदला पूरा हो जाए?''

रसूल (स0) ने उससे से पूछा : ''क्या तेरी माँ ज़िन्दा है?''

उसने कहा ''जी नहीं''

फिर आपने फरमाया : ''क्या तेरी ख़ाला ज़िन्दा है?''

उसने कहा : ''जी हाँ''

रसूल (स0) ने फरमाया : ''वह माँ के दर्जे में है। जा उसके साथ नेकी कर, उसके हक़ में नेकी तेरे गुनाह को माफ कर देगी।

(सफीनतुल बहार जिल्द–2 पेज–687)

माँ का गुस्सा

इस्लाम में औलाद से माँ का गुस्सा और

नाराज़गी औलाद की बरबादी और नासमझी की वजह गिनी गई है।

कुछ रवायतों में यह साफ लिखा है कि जो लोग माँ–बाप से बुरा सुलूक करेंगे वह जन्नत की खुशबू नहीं सूँघेंगे और अच्छाई का मुँह नहीं देखेंगें।

रसूल (स0) के साथियों में से एक शख़्स बीमार था और बिस्तर से लग गया था हुजूर उसको देखने के लिए तशरीफ ले गए, उसकी हालत बड़ी नाजुक थी और वह ज़िन्दगी की आख़री सासें ले रहा था।

रसूल (स0) ने उससे फरमाया : ''तौहीदे इलाही का इक़रार कर और कह ला इलाहा इललल्लाह''

उस शख़्स की ज़बान लड़खड़ा गई और वह इस पाक कलमें को न अदा कर सका।

हुज़ूर (स0) ने वहाँ मौजूद एक औरत से पूछाः ''क्या इस शख़्स की माँ ज़िन्दा है?''

उस औरत ने कहा : जी हाँ! मैं इसकी माँ हूँ।''

हुज़ूर (स0) ने फरमाया : ''क्या तुम इससे नाराज़ हो?''

उसने जवाब दिया : ''जी हाँ! और छः साल हो गए है कि मैंने इससे बात तक नहीं की है।''

रसूल (स0) ने उसे हिदायत फरमाई कि अपने बेटे की ग़ल्तियों को भूल जाए और उसे माफ कर दे।

उसने कहा : ''ऐ रसूल (स0)! आपके लिए मैंने उसे माफ किया और अब मैं इससे राज़ी हूँ।''

फिर सरवरे काएनात (स0) उस शख़्त की तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया : ''पढ़ ला इलाहा इललल्लाह।''

अब उसकी ज़बान खुल गई और बड़ी आसानी से सही अक़ीदे उसकी ज़बान पर जारी हो गए। (अलअमाली, तूसी जिल्द–1 पेज–62)

इमाम सादिक़ (अ0) ने फरमाया है : ''जो शख़्स चाहे कि मौत की तकलीफ उस पर आसान हो जाए उसे चाहिए कि अपने रिश्तेदारों से भलाई करे और माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करे। जो शख़्स इस तरीक़े पर चलेगा उसकी रूह आसानी के साथ निकलेगी और ज़िन्दगी में भी ग़रीबी और बेचारगी से परेशान न होगा। (अलअमाली, सदूक़ पेज–234)

एक शख़्स ने रसूल अकरम (स0) से माँ और बाप से एहसान के बारे में सवाल किया : रसूल (स0) ने उसे तीन बार माँ के बारे में और तीन बार बाप के बारे में नेकी करने की सिफ़ारिश की और इस मामले में माँ को बाप से पहले रखा।

(अल्काफ़ी जिल्द–2 पेज–162)

एक बार फिर माँ के बारे में ताकीद

ज़करिया बिन इबराहीम बयान करता है कि : ''मैं पहले इसाई था, बाद में मैंने इस्लाम क़बूल कर लिया और खुदा के घर में जाने की इज़्ज़त हासिल की। हज के सफर के बीच मैं इमाम सादिक़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मैं पहले ईसाई था और अब मुसलमान हो गया हूँ।''

इमाम (अ0) ने पूछा : ''तूने इस्लाम में ऐसी कौन सी ख़ास बात देखी कि इसे क़बूल कर लिया।''

मैंने कहा : ''क़ुर्आन मजीद की इस आयत नें मुझे इस्लाम की तरफ फेर दिया : मा कुन्त तदरी मल किताबु वलल ईमानु वलाकिन जअलनाहु नूरन नह्दी बिही मन नशाउ।'' (सूरए शूरा आयत–52)

आपको नहीं मालूम था कि किताब क्या है और ईमान किन चीज़ों का नाम है लेकिन हम ने उसे एक नूर क़रार दिया है जिसके ज़रिये अपने बन्दों में जिसे चाहते हैं उसे हिदायत दे देते हैं।

इमाम (अ0) ने फरमाया : ''अल्लाह तआला ने तुझे इस्लाम की तरफ हिदायत फरमायी है और तेरे दिल को उसके नूर से रौशन कर दिया है।'' फिर आपने मेरे हक़ में दुआ फरमायी और मुझे मसाएल के बारे में बहुत सी हिदायतें दीं।

मैंने कहा : ''मेरे माँ–बाप और रिश्तेदार ईसाई मज़हब पर क़ाएम हैं और मेरी माँ अन्धी है। क्या मेरे लिए जाएज़ है कि मैं उनके साथ ज़िन्दगी गुज़ारूँ और मिल जुलकर रहूँ?''

इमाम (अ0) ने पूछा : ''क्या वह सुअर का गोश्त खाते हैं?''

मैंने इस सवाल का जवाब नहीं में दिया।

इस पर आपने फरमाया : ''तेरे उनके साथ मिल जुलकर रहने में कोई हर्ज नहीं। अपनी माँ का ख़याल रख, उसके साथ एहसान कर और जब वह इस दुनिया से चली जाए तो उसके कफन–दफन का इन्तिज़ाम खुद कर।''

जब मैं हज के सफर से लौटकर कूफा पहुँचा तो इमाम (अ0) के इरशाद के मुताबिक़ अपनी माँ से बड़े प्यार और मोहब्बत से पेश आया। मैं खुद उसे खाना खिलाता, उसके कपड़े ठीक करता, उसके सर में कंघी करता और हर तरह से उसकी ख़िदमत करता।

जब माँ ने मेरे सुलूक में यह बदलाव देखा तो कहा : ''बेटे! जब तू हमारे मज़हब पर था तो मुझसे ऐसा सुलूक नही करता था, क्या वजह है कि तू जबसे मुसलमान हुआ है मुझ से बड़े प्यार और मोहब्बत से पेश आता है?''

मैंने जवाब दिया : ''पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के एक बेटे ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक करूँ।''

माँ ने कहा : ''क्या वही तुम्हारा पैग़म्बर है?''

मैंने जवाब दिया : ''नहीं, हमारे पैग़म्बर (स0) के बाद कोई और पैग़म्बर नही होगा, वह हमारे पैग़म्बर का बेटा है।''

माँ ने कहा : ''यह अहकाम पैग़म्बरों के अहकाम हैं और तेरा दीन मेरे दीन से अच्छा है, तू मुझे रहनुमाई कर ताकि मैं मुसलमान हो जाऊँ।''

मैंने उसे इस्लाम का तरीक़ा सिखाया और वह मुसलमान हो गई। उसने ज़ोहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ें पढ़ीं और आधी रात के वक़्त उसकी तबियत ख़राब हो गई।

मैं उसके बिस्तर के पास था और उसकी ख़िदमत में लगा हुआ था। उसने मुझसे कहा : ''माँ की जान! एक बार फिर इस्लाम के अहकाम मेरे लिए दोहरा दे।''

मैंने वह अहकाम दोहराए और उसने उन सब को क़बूल किया और उसी रात इन्तिक़ाल फरमाया।

दिन चढ़ने पर कुछ मुसलमानों के साथ उसका जनाज़ा इस्लामी रस्मों के हिसाब से उठाया गया। मैंने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और अपने हाथों से उसे दफन किया।'' (अलकाफी जिल्द–2 पेज–16)

पाक अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम की हदीसों में इस तरह की रिवायतें बहुत ज़ियादा हैं उन सब में माँ के दर्जे की अहमियत बयान की गई है और औलाद को माँ का हक़ अदा करने पर ज़ोर दिया गया है।